P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

छत्तीसगढ़ में राजनीतिक आंदोलनों का जनमानस पर प्रभाव

सीमा पान्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छ.ग., भारत

सारांश

1857 की क्रांति से छत्तीसगढ़ अछूता नहीं था। तत्कालीन रायपुर परिक्षेत्र ने स्वातंत्रय महायज्ञ में विशेष सक्रियता से भाग लिया था। 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में कांग्रेस की उदारवादी विचार धारा का स्पष्टतः प्रभाव छत्तीसगढ़ के प्रमुख जिलों में आयोजित विभिन्न आंदोलनों से दृष्टिगोचर होता है।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। 1920 में राजनांदगांव में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में मिल मजदूरों की 37 दिनों की ऐतिहासिक हड़ताल हुई, यह हड़ताल मजदूरों के पक्ष में ही समाप्त हुई। राजनांदगांव की मजदूर हड़ताल की सफलता से स्थानीय राष्ट्रीय आंदोलन को अद्भूत गति मिली।

छत्तीसगढ़ में सन् 1920 के मध्य कंडेल नहर सत्याग्रह आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस सत्याग्रह में भी किसानों की जय हुई। कंडेल का यह सत्याग्रह मध्यप्रांत सत्याग्रह का प्रथम सोंपान, ठीक उसी तरह बना जैसे बिहार चम्पारन सत्याग्रह 1917 व गुजरात का खेड़ा सत्याग्रह 1918।

सन् 1920 छत्तीसगढ़ के वकीलों एवं विद्यार्थियों ने असहयोग आंदोलन में खुलकर भाग लिया। मध्यप्रांत में विद्यार्थियों के बहिष्कार में शामिल होने का सबसे बड़ा वर्ग छत्तीसगढ़ का ही था। इस क्षेत्र के लगभग 500 विद्यार्थियों ने हाईस्कूलों का तथा एंग्लोवर्नाकुलर स्कूलों का बहिष्कार किया था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान छत्तीसगढ़ मे विधान परिषद के कांग्रेस सदस्यों ने अपनी सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। रायपुर में प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन 8 अप्रैल को रविशंकर शुक्ल ने नमक बनाकर प्रारंभ किया।

छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ों आंदोलन भी विशेष प्रभावपूर्ण रहा। रायपुर में छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ों आंदोलन प्रभावपूर्ण रहा। यह आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध किया गया अब तक का सबसे बड़ा आंदोलन था और इसने युद्ध काल में ब्रिटिश शासन की जड़े हिलाने का कार्य किया। छत्तीसगढ़ क्षेत्र बंगाल के समीप होने के कारण यहॉ बंगाल में पनप रही वामपंथी क्रांतिकारी विचारधारा का प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हुए विभिन्न आंदोलनों ने प्रांत में देशभक्ति व जागरूकता का संचार किया। जन–जन में स्वतंत्रता का संदेश फूंकने वाले ये आंदोलन अंततः स्वाधीनता प्राप्त कर पूर्ण हुए।

मुख्य शब्द : प्रभामण्डल, बहिष्कार, परिक्षेत्र, उदारवादी, दृष्टिगोचर, सूत्रपात, कुर्क, नृशंस, सत्याग्रह, जागृति, उपक्रम, प्रतिध्वनि, सर्वोपरि, मिथ्या, गांधीवादी, फासिज्म, साम्यवाद, साइक्लोस्टाइल, वामपंथी।

प्रस्तावना

1857 की क्रांति से छत्तीसगढ़ अछूता नहीं था। तत्कालीन रायपुर परिक्षेत्र ने स्वातंत्रय महायज्ञ में विशेष सक्रियता से भाग लिया। इस क्षेत्र की जनता व सैनिकों का नेतृत्व किया। सोना खान के जमींदार नारायण सिंह ने जिसे अगस्त 1856 में अकाल पीड़ित जनता को एक व्यापारी के भण्डार से आवश्यक अनाज निकालकर बांटने के आरोप में गिरफ्तार किया था। हालांकि 1857 की क्रांति विशेष परिस्थितियों में सफल नहीं हो सकी थी किंतु इस क्रांति ने विभिन्न संगठनों के निर्मित होने का मार्ग प्रशस्त किया जिसमें सबसे महत्वपूर्ण संगठन था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस । 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में कांग्रेस

की उदारवादी विचार धारा का स्पष्टतः प्रभाव छत्तीसगढ़ के प्रमुख छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों की सभी घटनाएं रायपुर जिले से संचालित होती रही।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। उन्होंने इस अंचल में सामाजिक और राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात किया। स्वदेशी आंदोलन के समर्थन रहे तथा खादी आश्रमों की स्थापना की। ठाकुर प्यारेलाल,शिवलाल मास्टर, शंकर खरे आदि खादी का प्रचार प्रसार करते रहे। 1909 में ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने सरस्वती पुस्तकालय की जो राजनीतिक गतिविधियों को केन्द्र बना। 1916 में श्रीमती एनीबेसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की। इसकी शाखाएं छत्तीसगढ़ में भी स्थापित हुई। मूलचंद बागड़ी, माधवराव सप्रे, लक्ष्मण राव के प्रयास इसमें उल्लेखनीय है। वर्ष 1918 में मध्य प्रांत राजनीतिक परिषद् की रायपुर में बैठक हुई जिसमें उल्लेखनीय है। वर्ष 1918 में मध्य प्रांत राजनीतिक परिषद की रायपुर में बैठक हुई जिसमें तिलक के होमरूल आंदोलन का पूर्ण समर्थन किया गया। बिलासपुर जिले के राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रदूत ई. राघवेन्द्र राव, कुंज बिहारी अग्निहोत्री और बैरिस्टर छेदीलाल सिंह थे।

1920 में राजनांदगांव में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में मिल मजदूरों की 37 दिनों की ऐतिहासिक हड़ताल हुई। अखिल भारतीय श्रमिक संघ के नेता वी.पी. गिरी राजनांदगांव आये। अंततः यह हड़ताल मजदूरों के पक्ष में ही समाप्त हुई। राजनांदगांव की मजदूर हड़ताल की सफलता से स्थानीय राष्ट्रीय आंदोलन को अद्भुत गति मिली। तदन्तर जालियांवाला बाग का नृशंस हत्याकांड हुआ जिससे ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध देशव्यापी हड़तालें होने लगी। राजनांदगांव के ठाकुर प्यारेलाल सिंह, डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, ठाकुर पन्नालाल सिंह व बंशी लाल के सहयोग से राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई।

गांधी जी के कथनानुसार ''अंग्रेज सरकार शैतान है , उसे अपनी भूलों पर कोई दुख नहीं है।'' अतः स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हमें अहिंसात्मक, असहयोग की नीति अपनानी चाहिए। इस प्रकार 1920 का वर्ष असहयोग का संदेश लेकर प्रस्तुत हुआ। छत्तीसगढ़ में सन् 1920 के मध्य सत्याग्रह आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस सत्याग्रह का कारण यह था कि शासन ने कृषकों पर ''नहर कर'' लगा दिया था। इसके विरोध में कृषकों ने उक्त कर न देने का संकल्प लिया। इस सत्याग्रह का संचालन पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावले तथा छोटेलाल बाबू ने किया। नहर कर न देने की स्थिति में किसानों के मवेशियों को कुर्क किया गया और उन्हें स्थानीय बाजारों में बेचने का उपक्रम किया गया, परन्तु दिसम्बर 1920 तक ये मवेशी न तो बेचे गये और न ही नहर टैक्स की वसूली की जा सकी। यह सत्याग्रह शांतिपूर्ण चलता रहा और इसे गॉधी जी ने अपना मार्गदर्शन देना स्वीकार किया था। इस सत्याग्रह में किसानों की जय हुई । कंडेल का यह सत्याग्रह मध्यप्रांत सत्याग्रह का प्रथम सोंपान, ठीक उसी तरह बना जैसे बिहार चम्पारन सत्याग्रह 1917 व गुजरात का खेड़ा सत्याग्रह 1918। 1920 में गांधीजी रायपुर पधारे जिलों में आयोजित विभिन्न आंदोलनों से दृष्टिगोचर होता है। 1885–1905 तक वे धमतरी व कुरूद भी गये। कंडेल सत्याग्रह अब समाप्त हो गया था और सत्याग्रह आंदोलन के जन्दाता का यहॉ के निवासियों ने हार्दिक स्वागत किया। रायपुर में उन्होंने महिलाओं की सभा को संबोधित किया। उसी समय से इस क्षेत्र की महिलाओं में भी विशेष जागृति परिलक्षित हुई तथा स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने सक्रिय भाग लिया।

सन् 1920 में नागपुर में कांग्रेस का सम्मेलन आयोजित हुआ जिससे छत्तीसगढ़ के सैकड़ों लोग शामिल हुए थे। पं. रविशंकर शुक्ल , नारायण राव मेघावाले, पं. सुन्दरलाल शर्मा, ई. राघवेन्द्र राव प्रमुख थे। छत्तीसगढ़ के वकीलों ने असहयोग आंदोलन में भाग लेते हुए न्यायालयों के बहिष्कार की घोषणा की। वकीलों के पश्चात् विद्यार्थियों ने भी असहयोग आंदोलन में खुलकर भाग लिया। सरकारी स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए 5 फरवरी 1921 में रायपुर में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई। इसके संचालक शिवदास डागा थे। बलदेव प्रसाद मिश्र, डॉ पन्नालाल सिंह एवं बंसीलाल के प्रयासों के क्षेत्रीय विद्यालय की स्थापना की गई।

मध्यप्रांत में विद्यार्थियों के बहिष्कार में शामिल होने का सबसे बड़ा वर्ग छत्तीसगढ़ का ही था। इस क्षेत्र के लगभग 500 विद्यार्थियों ने हाईस्कूलों का तथा एंग्लोवर्नाकुलर स्कूलों का बहिष्कार किया था। जबकि जबलपुर क्षेत्र में इन विद्यार्थियां का प्रतिशत 35 था। विद्यार्थियों के बहिष्कार के साथ ही छत्तीसगढ़ में शराब तथा शासन व्यापार के बहिष्कार को भी व्यापक समर्थन मिला। रतनपुर में जनवरी 1921 में पं. सुंदरलाल शर्मा तथा कुतुबुद्दीन ने इस बहिष्कार का प्रारंभ किया। इन्होंने लगभग दो हजार लोगों के साथ नगर में शराब दुकानों पर धरना दिया। असहयोग आंदोलन का एक अन्य कार्यक्रम था विदेशी कपड़ों का बहिष्कार तथा खादी के वस्त्रों का पहनना। यह कार्यक्रम भी छत्तीसगढ़ में सफलतापूर्वक संचालित हुआ। इस दिशा में रायपुर की नगरपालिका ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार में तथा खादी के प्रचार में उल्लेखनीय योगदान दिया। । अधिकांश बड़े ग्राम राष्ट्रीय आंदोलन के केन्द्र बन रहे थे, हजारों की संख्या में लोग कांग्रेस के सदस्य हो गये थे।

अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में सहयोग और खिलाफत आंदोलनों के साथ साथ चलाने का निर्णय लिये जाने के फलस्वरूप 17 मार्च 1920 को रायपुर में खिलाफत समिति की स्थापना सैयद असगर अली के प्रयासों से की गई थी। असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद भी छत्तीसगढ़ राजनीतिक उत्तेजना शांत नहीं हुई। 18 मार्च 1923 को गांधी दिवस के उपलक्ष्य में जबलपुर नगर पालिका के भवन पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया।

जनवरी 1930 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने सविनय अवज्ञा के संदर्भ में देशवासियों को निर्देश दिया। इस निर्देश के अनुसार प्रदेश के साथ छत्तीसगढ़ में भी सविनय अवज्ञा आंदोलन की तैयारियां होने लगी। सर्वप्रथम विधान परिषद के कांग्रेस सदस्यों ने 17 जनवरी को अपनी सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया तथा वे अन्य

कांग्रेसियों के साथ प्रत्येक नगर एवं गांव में आंदोलन का प्रचार करते हुए लोगों को 27 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए तैयार करने लगे। निर्धारित दिन क्षेत्र के सभी स्थानों पर तिरंगा फहरा कर स्वतंत्रता का स्वागत किया। यहॉ तक वन्य क्षेत्र में तथा अन्य भागों से पुरूषों, बालकों तथा महिलाओं के दल के दल प्रातःकाल से ही खुले स्थानों में एकत्रित हुए और उन्होंने तिरंगा फहराया ।

इसी संदर्भ में राष्ट्रीय सप्ताह पूरे छत्तीसगढ़ में 6 अप्रैल से 13 अप्रैल तक मनाया गया जिसमें सभाओं जुलूसों और गीतों के माध्यम से सविनय अवज्ञा आंदोलन को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प किया गया। रायपुर में प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन 8 अप्रैल को रविशंकर शुक्ल ने नमक बनाकर प्रारंभ किया। 15 अप्रैल 1930 को रायपुर में महाकौशल राजनीतिक परिषद का सम्मेलन में नेताओं ने जंगल सत्याग्रह की रूपरेखा बनाईं परिषद को युद्ध परिषद की संज्ञा दी गई तथा इसका नाम प्रांतीय महाकौशल परिषद किया गया। सदस्यों ने नमक सत्याग्रह को फैलाने, प्रतिबंधित साहित्य को पढ़ने, जंगल सत्याग्रह करने तथा अन्य सविनय अवज्ञा के कार्य करने का निर्णय लिया। बिलासपुर, दुर्ग राजनांदगांव जिले में आंदोलन काफी तेज रहा । 1930 में राजनांदगांव में प्रभामण्डल की स्थापना की गई। इस मण्डल का मुख्य उद्देश्य देश के राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेना था। यहॉ पट्टा आंदोलन भी चला। क्रांतिकारियों के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की गई।

गांधीजी ने हरिजन उद्धार आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ का दौरा किया। कम्युनल एवार्ड की पृष्ठभूमि में 7 नवम्बर 1933 को वर्धा के सेवाग्राम से ऐतिहासिक हरिजन दौरा प्रारंभ हुआ। यह दौरा मध्यप्रदेश के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि इसके अंतर्गत वे राज्य के सुदूर छोटे–छोटे गांवों में गये। मध्यप्रदेश में गांधीजी के दौरे की व्यवस्था का सूत्र मुख्यतः पं. रविशंकर शुक्ल तथा ब्योहार राजेन्द्र सिंह के हाथ में था। दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर का उन्होंने दौरा किया।

लंदन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से गांधीजी के खाली हाथ वापसी ने उन्हें पुनः आंदोलन प्रारंभ करने के लिए बाध्य किया। फलस्वरूप 1931 के अंत में पुनः सविनय अवज्ञा के दूसरे चरण का प्रारंभ प्रदेश में हो गया।

मार्च 1940 में महात्मा गांधी के आव्हान पर पूरे देश में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ हो गया। छत्तीसगढ़ में व्यक्तिगत सत्याग्रह का विशेष प्रभाव दिखाई नहीं पड़ा फिर भी बिलासपुर, रायपुर और दुर्ग जिलों में इसकी तैयारियों की जा रही थी। सत्याग्रह की तैयारी के कार्यको संगठित करने के लिए हरिजन संपर्क, अल्पसंख्यक चरखा तथा खादी विभागों की स्थापना की गई। गांधीजी के आदेशों तथा कांग्रेस के प्रचार के लिए रायगढ़ कांग्रेस के पश्चात् उस जिले में 314 आम सभाओं का आयोजन किया गया।

वर्ष 1941 के जनवरी में छत्तीसगढ़ में व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन ने पुनः जोर पकड़ा। जनवरी के अंत तक रायपुर में 474 बिलासपुर में 176 तथा दुर्ग 100 सत्याग्रही आंदोलनरत थे। बिलासपुर में ठाकुर छेदीलाल की अध्यक्षता में जिले भर में सत्याग्रही को भर्ती करने का लक्ष्य रखा गया। रायपुर जिले में रविशंकर शुक्ल ने पूरे जिले में घूम–घूम कर सत्याग्रह का प्रचार किया। अक्टूबर में जेल से छूट कर आने के पश्चात् रविशंकर शुक्ल ने 21 नवंबर से पुनः सत्याग्रह करने की घोषणा की थी। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में सूखे की स्थिति को देखते हुए यह आंदोलन 1941 के अंत तक लगभग समाप्त हो गया।

छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ों आंदोलन भी विशेष प्रभावपूर्ण रहा। 9 अगस्त को प्रातः 5 बजे बिलासपुर नगर में प्रमुख नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में आयोजित 15 सौ लोगों की सभा में शासन विरोधी नारे लगाये गये। इस सभा पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया। धीरे धीरे यह आंदोलन बिलासपुर शहर के अलावा गांवों को प्रभावित करने लगा। बिलासपुर के आंदोलन का नेतृत्व कालीचरण तिवारी के हाथ में आ गया। कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी के कारण आंदोलन का नेतृत्व अपने आप विद्यार्थियों के हाथ आ गया। इधर रायपुर में 9 अगस्त को कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया तथा 10 अगस्त को रायपुर के विद्यार्थियों व नवयुवकों ने जुलूस निकाला। ये गुप्त स्थानों पर एकत्रित होने योजना बनाते तथा लोगों में साइक्लोस्टाइल समाचार पत्र पर्चे आदि वितरित करते थे। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान रायपुर जिले में गिरफ्तारियों की संख्या 447 हो गई थी।

बिलासपुर में 15 अगस्त 1942 को नगर के विद्यार्थियों का सबसे बड़ा जुलूस कालीचरण तिवारी, साधूलाल कंपाउंडर, शिव रतन तिवारी, चित्रकांत जायसवाल को गिरफ्तार किया गया। रतनपुर, पेण्ड्रा की जनता ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दुर्ग जिले में दुर्ग के अतिरिक्त राजनांदगांव और छुई खदान आंदोलन चला, जिसमें अनेक व्यक्ति गिरफ्तार हुए। इन जिलों में अनेक युवक संस्थाएं व अन्य संस्थाएं आंदोलन में सक्रिय रहीं जैसे छत्तीसगढ़ तथा नवयुवक मण्डल, दुर्ग किसान सभा तथा सतनामी आश्रम आदि। बिलासपुर अंचल के अनेक ग्रामीण क्षेत्र तख्तपुर, मुंगेली, कटघोरा, जांजगीर, बाराद्वार, सक्ती , रतनपुर आदि स्थानों पर व्यापक रूप से चला। यद्यपि यह आंदोलन प्रारंभ में अहिंसक रहा किंतु बाद में इसके हिंसक रूप धारण कर लिया। पुलिस ने जनता पर क्रूरतापूर्ण व्यवहार के कारण कुछ स्थानों पर व्यापक रूप से चला। यद्यपि यह आंदोलन प्रारंभ में अहिंसक रहा किंतु बाद में इसके हिंसक रूप धारण कर लिया। पुलिस ने जनता पर क्रूरतापूर्ण व्यवहार के कारण कुछ स्थानों पर अमानवीय व्यवहार हुए। भारत छोड़ों आंदोलन से यह स्पष्ट होता कि लोगों में ब्रिटिश विरोधी सभाएं कितनी उग्र थी।

संपूर्ण मध्यप्रांत में अक्टूबर 1942 तथा बाद के दिनों में आंदोलन शिथिलता की अग्रसर होने लगा। आंदोलन मुख्यतः दो धाराओं में बंट गया। प्रथम मध्यप्रांत के कुद के स्थानों पर उपद्रवों के छुटपुट घटनायें, जुलूस तथा पर्चेबाजी तक सीमित रही। तथा द्वितीय आंदोलन अपने रूप में सक्रिय रहा। बिलासपुर में गांधी जयंती के

अवसर पर जुलूस निकाले गये और शासन विरोधी नारे लगाये गये। बिलासपुर, मुंगेली, अकलतरा इत्यादि स्थानों पर लोगों में सरकारी भवनों पर झंडा फहराने का प्रयास किया। प्रांतीय स्तर पर भूमिगत आंदोलन के तहत प्रचार सामग्री का वितरण किया गया जिसमें तोड़फोड़ के आदेश होते थे। बिलासपुर में भी आंदोलनकारियों द्वारा एक साइक्लोस्टाइल बुलेटिन निकाला जाता था जिसे साइकल से या पैदल निकल कर बांटा जाता था।

छत्तीसगढ़ क्षेत्र बंगाल के समीप होने के कारण यहॉ बंगाल में पनप रही वामपंथी क्रांतिकारी विचारधारा का प्रभाव पड़ा। रायपुर में पुलिस को क्रांतिकारी गतिविधियों की सूचना मिली जिसके आधार पर 15 जुलाई को परसराम सोनी को पिस्तौल के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। सोनी के साथ सुधीर मुखर्जी, होरीलाल, गिरीलाल, देवीकांत झा, सूर्यवंध शीघ्र गिरफ्तार कर लिये गये। क्रांति कुमार भारतीय को बंबई अधिवेशन से लौटते समय गोंदिया में गिरफ्तार कर एक वर्ष के लिए नजरबंद किया गया।

छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ों आंदोलन प्रभावपूर्ण रहा। आंदोलन की असफलता का मुख्य कारण नेतृत्व की कमी तथा भूमिगत कार्यकर्ताओं द्वारा शासन के विरूद्ध उग्र संघर्ष प्रारंभ कर देने से सरकार द्वारा इनका दृढ़ता से दमन किया जाना था। जनवरी 1944 तक भारत छोड़ों आंदोलन की समाप्ति हो गई थी। यह आंदोल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध किया गया अब तक का सबसे बड़ा आंदोलन था और इसने युद्ध काल में ब्रिटिश शासन की जड़े हिलाने का कार्य किया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम में मध्यप्रांत में उसकी भूमिका को परिलक्षित करना है। मध्यप्रांत में छत्तीसगढ़ प्रांत आम तौर पर तो शांत प्रदेश माना जाता है किन्तु स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ की भूमिका सर्वोपरि रही। उसका अध्ययन आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हुए विभिन्न आंदोलनों ने इस प्रांत में देशभक्ति व जागरूकता का संचार किया। जन–जन में स्वतंत्रता का संदेश फूंकने वाले ये आंदोलन अंततः स्वाधीनता प्राप्त कर पूर्ण हुए।

अंत टिप्पणी

पार्लियामेंटरी पेपर्स–रिगाडिंग म्युटिनी फर्दर पेपर्स नं. 4, पृ. 278

द इंडियन नेशनल कॉग्रेस1939–40, ए.आई.सी.सी. पेपर्स, पृ. 10–11

निर्मलकांत श्रीवास्तव–छत्तीसगढ़ की रियासतों में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास पृ. 93

छत्तीसगढ़ में गॉधी–रायपुर राजनीतिक खण्ड, पृ. 1

राजेटियर ऑफ इंडिया एम.पी. रायपुर जिला गजेटियर पृ. 78

जे.पी. शर्मा, मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन 1920–1947 पृ. 56

मध्य प्रदेश और गॉधीजी पृ. 11–12

रिपोर्ट आन द इंडियन पेपर्स पब्लिश्ड सेंण्ट्रल प्राविन्सेज एण्ड बरार 1921 प. 53

म.प्र. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रायपुर. पृ. 63

सेण्ट्रल प्रोविन्सेस लेजिस्लेटिन कौसिल प्रोसीडिग्स 1921 खण्ड 2, पृ. 725–29

होम पोलिटिकल फाइल 45 पाक्षिक रिपोर्ट मार्च 1921 का दो पक्ष पृ . 17

द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गॉधी खण्ड 21 अगस्त, दिसम्बर 1921 पृ 31–32

हितवाद, नागपुर 26 मार्च 1921

होम पोलिटिकल फाइल 18.1922 पाक्षिक रिपोर्ट फरवरी 1922 का दो पक्ष पृव 61

फाइल नं. आर. 1153, 1923 का झंडा सत्याग्रह पृ. 1

डी.पी. मिश्रमध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास पृ. 373

सत्यकेतु विद्यालंकार–भारत का राष्ट्रीय आंदोलन पृ. 134

जे. आर. वल्योनी, व्ही.डी. साहसी छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पृ. 169–170

सेंट्रल प्राविंसेस कौसिल प्रोसीडिंग्ड खण्ड 1 मार्च 1931 पृ 764

छत्तीसगढ़ में गांधीजी रायपुर 1970 पृ. 18

शुक्ल अभिनंद ग्रंथ जीवनी खण्ड 2 पृ. 28

मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर , रायपुर पृ. 84

महाकौशल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की रिपोर्ट माह जनवरी/फरवरी 1941

होम पोलिटिकल फाइल 1814–1940 पाक्षिक रिपोर्ट अप्रैल 1940 का प्रथम पक्ष तथा द्वितीय पक्ष

होम पोलिटिकल फाइल 1815–1941 पाक्षिक रिपोर्ट मई 1941 का प्रथम पक्ष तथा द्वितीय पक्ष

अमृत बाजार पत्रिका,कलकत्ता पृ. 6–7

मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रायपुर पृ. 87

डी.पी. मिश्र द हिस्ट्री ऑफ बिलासपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम प. 205

डॉ ब्रजभूषण सिंह आदर्श बिलासपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम पृ. 205

मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बिलासपुर पृ. 81–82

होम पोलिटिकल फाइल 19.8.42 पाक्षिक रिपोर्ट सितंबर 1942 का प्रथम खण्ड

आर. टाटेहम –कांग्रेस रिस्पांसिबिलिटी फार डिस्फरेंस पृ. 70–77

साक्षात्कार– चित्रकांत जायसवाल

सोडिषन कमेटी रिपोर्ट पृ. 21–22

परसराम सोनी– रायपुर षडयंत्र केस हस्तलिखित प्रतिलिपि के आधार पर

नव भारत भोपाल 31.8.1997 ''जरा याद करो कुर्बानी''